चक्रधर समारोह, रायगढ़

रजत जयंती वर्ष 2009

कलेक्टर एवं अध्यक्ष : आयोजन समिति

।। सुर–ताल, छंद और घुँघरु के 25 बरस ।।

शताब्दियाँ दर शताब्दियाँ बीतती जाती हैं तब जाकर किसी एक शताब्दी की कोख से महाराजा चक्रधर सिंह जैसे कालजयी सांगीतिक व्यक्तित्व का जन्म होता है। स्व. महाराजा चक्रधर सिंह का जन्मदिवस, गणेशमेला के रूप में जाना गया और अब यह राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक उत्सव " चक्रधर समारोह " के नाम से विख्यात हो गया है। रजत जयंती के विशेष अवसर पर प्रकाशित यह कलेण्डर, एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक दस्तावेज है।

छत्तीसगढ़ शासन, संस्कृति विभाग एवम् जिला प्रशासन रायगढ़।